भूमिका

समकालीन कवियों में रमाशंकर यादव 'विद्रोही' का महत्वपूर्ण स्थान है। समकालीन चुनौतियों व मुद्दों को वे जिस तरह से हमारे सामने रखते हैं, इससे उनका बेबाक व्यक्तित्व उभरकर सामने आता है। निश्चित रूप से वे कबीर, निराला एवं मुक्तिबोध की ही परम्परा के कवि हैं। सामाजिक विसंगतियों के प्रति जिस आक्रोश की अभिव्यक्ति कबीर एवं मुक्तिबोध के काव्य में होती है, उसी आक्रोश को आगे की कवि परम्परा में ले जाने का काम विद्रोही करते नज़र आते हैं। उनका जीवन और काव्य दोनों ही इस बात को और अधिक प्रामाणिक बनाते हैं। विद्रोही की कविता पूरी तरह अपने समय और समाज से जुड़ी हुई है। उनकी कविता न सिर्फ व्यवस्था से बल्कि बुनियादी तौर पर अपने युग की अमानवीय परिस्थितियों से जूझती नजर आती है और इसके साथ ही उसमें गरीब और वंचित लोगों की मुक्ति के लिए संघर्ष भी दिखाई पड़ता है। अगर एक वाक्य में कहें तो विद्रोही यथार्थ के ठोस धरातल पर खड़े अपने वक्त के जागरूक प्रहरी हैं।

जीवन मूल्यों से पृथक साहित्य की बात नहीं की जा सकती। विद्रोही का सम्पूर्ण साहित्य सामाज निर्माण में लगे कवि का बिम्ब हमारे मस्तिष्क में उभारता है। विद्रोही की कविताओं को पढ़ने से यह स्पष्ट होता है कि वे सिर्फ ध्वंसात्मक न होकर निर्माणात्मक भी हैं। यही कारण है कि वे अपनी कविताओं में भविष्य के प्रति केवल चिंतित ही नहीं रहते बल्कि उसके लिए संघर्षरत भी दिखाई पड़ते हैं। विद्रोही नवीन जीवन मूल्यों के निर्माण की बात करते हैं।

विद्रोही अपने अल्प जीवन-काल में साहित्य को जो कुछ दे गए, उसे कभी भी नकारा नहीं जा सकता। हिंदी कविता के रचनात्मक विकास की प्रक्रिया में वे एक महत्वपूर्ण कवि हैं। जब हम आधुनिक हिंदी कविता के मूल्यांकन की बात करेंगे तो मुक्तिबोध और धूमिल के बाद के कवियों के रचनात्मक संघर्षों एवं उपलब्धियों का विवेचन बिना विद्रोही के मूल्यांकन के नहीं किया जा सकता है। विद्रोही का कृतित्व एक ऐतिहासिक दस्तावेज है।

विद्रोही के काव्य के बहुआयामी स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय "रमाशंकर 'विद्रोही' का जीवन संघर्ष" है, जिसमें उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को दिखाने का प्रयास किया गया है। द्वितीय अध्याय "रमाशंकर 'विद्रोही' की कविताओं में युगचेतना" में युगचेतना के अर्थ और स्वरूप को स्पष्ट करने के साथ-साथ विद्रोही की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक चेतना को दिखाया गया है। इसके साथ ही इस अध्याय में विद्रोही की जनवादी चेतना के स्वरूप व संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

किसी भी कवि को समझना है तो उसकी दृष्टि को सबसे पहले समझना आवश्यक होगा। यही कारण है कि प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के तृतीय अध्याय "रमाशंकर 'विद्रोही' की कविता और नव विमर्श" के अंतर्गत स्त्री चेतना, दलित चेतना और किसान-मजदूर चेतना के व्यापक परिप्रेक्ष्य में विद्रोही की कविता को देखने का प्रयास किया गया है। इन सबके अंतर्गत विद्रोही की कवि-दृष्टि को संपूर्णता के साथ समझने की कोशिश की गयी है।

चतुर्थ अध्याय "रमाशंकर 'विद्रोही' की कविताओं की भाषा और शिल्प" के अंतर्गत विद्रोही की भाषा पर विचार किया गया है। उल्लेखनीय है कि भाषा मूलतः कवि के अंतर्मन से सम्बन्धित होते हुए भी तत्कालीन युगबोध को अभिव्यक्त करने वाली होती है। इसीलिए विद्रोही की भाषा को समझना और समझाना अधिक आवश्यक प्रतीत होता है।

अंत में निष्कर्ष के रूप में उपसंहार प्रस्तुत करते हुए संदर्भ ग्रंथ-सूची दी गयी है।